09 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अन्तर्मुखी बन सदा बन्धनमुक्त और योगयुक्त स्थिती का अनुभव

➢➢ मैं त्यागी और तपस्वी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ कमलासन पर विराजमान हूँ

→ मुझ आत्मा से रंगबिरंगी गुणों और शक्तियों की किरणें निकल रही हूँ

■ समस्त संसार में फैल रही है

➳ _ ➳ सारा संसार

→ जड़,
→ चैतन्य
→ और जंगम सहित

■ सर्वस्व इन गुणों और शक्तियों से भरपूर हो रहा हैं

➢➢ अब मैं अपने फरिश्ता स्वरूप धारण करती हूँ

➳ _ ➳ में उड़ चलती हूँ

→ सूक्ष्मवतन की ओर
→ अपने प्राणप्रिय बापदादा के पास

■ बापदादा के विशाल आकारी शरीर के समक्ष

→ मैं फरिश्ता एक नन्हा सा बालक हूँ

➳ _ ➳ बापदादा से शक्तिशाली किरणें आ रही है

→ मुझ पर शक्ति भर रही है

→ तीनो लोकों में फैल रही हैं

■ बापदादा मुझे अपने कंधो पर बिठाकर

→ पूरे सूक्ष्मवतन की सैर करा रहे है

➳ _ ➳ मैं फरिश्ता देख रही हूँ

→ रास्ते में आने वाले चित्रों को
→ चांद सितारों की उपर की इस दुनिया को

■ हर्षित हो रही हूँ

➳ _ ➳ फिर बाबा दिल का चित्र निकालने की मशीनरी दिखाते हैं

→ सारे संकल्प बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहे है...

■ दिल के...
■ अंतर मन के

→ और छोटे, बड़े दाग भी

■ स्पष्ट दिखाई दे रहे है..

➳ _ ➳ मैं देख रही हूँ

→ अपनी ही कमी कमजोरी के चित्र को...

■ कभी तो मेरे दिल में कोई आत्मा आती दिखाई दे रही है तो कभी कोई...
■ कभी कही किसी से लगाव झुकाव होने कारण दिल से बापदादा निकल जाते ...
■ कही घृणा नफरत के कारण...
■ कभी पांच तत्वो से निर्मित देह अपनी तरफ खिंचता...
■ कभी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ आकर्षित करती...

→ इस तरह भिन्न भिन्न प्रकार के चित्र दिखाई दे रहे है मेरे दिल में...

➢➢ मैं फरिश्ता मेहनत मुक्त हो रही हूँ

➳ _ ➳ बापदादा अपनी किरणों से
➳ _ ➳ अपने वायब्रेशन्स के माध्यम से

→ दिल के सारे छोटे-बड़े दाग को साफ करते जा रहे है...

■ अब दिल साफ हो गया
■ एकदम हलकापन अनुभव हो रहा है...
■ डेड साइलेन्स की अनुभूति हो रही है...
■ एक बाप दूसरा न कोई दिल से यही गीत बज रहा है...

➳ _ ➳ अब मैं मेहनत मुक्त होगयी

→ मैं भी दिलाराम के दिल में
→ और दिलाराम भी मेरे दिल में...

■ अब माया चाहे कोई भी रूप लेकर आए...

→ चाहे सूक्ष्म रूप हो,
→ चाहे रायल रूप हो,
→ चाहे मोटा रूप हो...

■ दिलाराम को दिल से हटा नहीं सकती...
→ स्वप्न मात्र,
→ संकल्प मात्र भी
■ माया आ नहीं सकती...
■ मनसा में भी एकदम मेहनत मुक्त अवस्था हो चुकी है...

➳ _ ➳ अब मैं फरिश्ता बापदादा को धन्यवाद करती हूँ

➳ _ ➳ वापस लौटती हूँ
→ अपने कर्मक्षेत्र में
→ अपने सेवा स्थान पर...

➳ _ ➳ मैं फरिश्ता शरीर में प्रवेश करती हूँ
→ मेहनत मुक्त अवस्था का अनुभव कर रही हूँ...
■ कोई भी कर्म करते हुए भी कर्म बंधन या कर्मेन्द्रियाँ अपनी तरफ आकर्षित नही कर पा रही...
→ मुझे कर्मातीत अवस्था की अनुभूति हो रही है...
→ मुझे बन्धनमुक्त अवस्था का अनुभव हो रही है...
→ इस बन्धनमुक्त अवस्था में दिलाराम को अपने दिल में समाए हुए...
■ योगयुक्त आत्मा बन गई
■ जीवनमुक्त अवस्था पा लिया

👇🟧✔️

➳ _ ➳ फिर बाबा दिल का चित्र निकालने की मशीनरी दिखाते हैं
→ सारे संकल्प बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहे है...
■ दिल के...
■ अंतर मन के
→ और छोटे, बडे दाग भी
■ स्पष्ट दिखाई दे रहे है...